पुUना International School
Shree Swaminarayan Gurukul, Zundal

Class 7 : **sample note book**

बाल महाभारत

पाठ 1 से 5

शब्दार्थ

1 मोह लेना- आकर्षित करना

2 क्षोभ - क्रोध

3 अभिनय - नाटक

4 भोग -विलाश - मौजमस्ती

5 घृणित - नफरत करने योग्य

6 नवयोवन - युवावस्था

7 विरक्त - सांसारिक लगाव से मुक्त

8 प्रफुल्लित - प्रसन्न

9 वियोग - बिछड़ना

10 उदविग्न - परेशान

11 कुशाग्रबद्धि - तेज दिमाग वाला

12 स्वेछाचारी - मनमानी करने वाला

13 जितेंद्रिय - जिसने इंद्रियों को जीत लिया है

14 वीरोचित - वीरोंके अनुरूप

15 कोख - गर्भ

16 कुचाल - षडयंत्र

17 कीत्ति - यश

18 लालसा - इच्छा

प्रश्नों के उत्तरः

1 किसने राजा शांतनु को मोह लिया

उत्तरः गंगा ने

2 गंगा ने सातो बच्चों का क्या किया?

उत्तरः सातों बच्चों को गंगा ने नदी की धारा में फेक दिया।

3 केवटराज ने राजा शांतनु से क्या वचन माँगा?

उत्तरः आपके बाद हस्तिनापुर के राज-सिंहासन पर मेरी लड़की का पुत्र बैठेगा।

4 किसने आजन्म बाह्मचारी रखने की प्रतिज्ञा ली?

उत्तरः देवव्रत ने

5 शांतनु के बाद कौन हस्तिना पर के सिंहासन पर बैठा?

उत्तरःचित्रांगद

6 चित्रांगद कैसा था?

उत्तरः वीर परंतु स्वेच्छाचारी

7 धर्मदेव आगे चलकर किस नाम से प्रसिद्ध हुआ?

उत्तरः विदुर

8 कुंती का विवाह किसके साथ हुआ?

उत्तरः राजा पांडु के साथ।

वसंत

पाठ 4 कठपुतली कविः भवानीप्रसाद मिश्र

1 कठपुतली गुस्से से------------पर छोड़ दो ।

प्रसंगः प्रस्तुत पंक्तियाँ हमारी पाठयपुस्तक वसंत भाग 2 से ली गई है। जिसके लेखक है भवानी प्रसाद मिश्र

व्याख्याःकवि कहता हे कि दूसरों के इशारे पर नाचने वाली कठपुतली को देखकर बहुत गुस्से में आकर कहने लगी । ये धागे मेरे शरीर कर आगे और पीछे क्योंबाँध रखे है?तुम इन्हें तोड़ दो और मुझे स्वतंत्र कर दो। मुझे मेरे पाँवों पर स्वतंत्र होकर चलने दो।

विशेषः कठपुतली के स्वतंत्र होने की इच्छा का वणंन है।

2 सुनकर बोली और-और --------बहुत दिन हुए मन के छंद छुए हुए।

प्रसंगः प्रस्तुत पंक्तियाँ हमारी पाठयपुस्तक वसंत भाग 2 से ली गई है। जिसके लेखक है भवानी प्रसाद मिश्र

व्याख्याः कवि कहता है कि एक कठपुतली के स्वतंत्र होने की इच्छा है सुनकर अनय सभी कठपुतली बोलने लगो की

व्याख्याः कवि कहता है कि एक कठपुतली के स्वतंत्र होने की इच्छा है सुनकर अन्य सभी कठपुतली बोलने लगी की हमे बहुत दिन हुए अपने मन के बात नहीं की। हमने मन की इच्छाओं को दबाकर रखा है।

PUNA

विशेषःगुलाम कठपुतलियों का वर्णन है।

3 पहली कठपुतली सोचने लगी------मेरे मन में जगी।

प्रसंगः प्रस्तुत पंक्तियाँ हमारी पाठयपुस्तक वसंत भाग 2 से ली गई है। जिसके लेखक है भवानी प्रसाद मिश्र

व्याख्याः कवि कहता है कि अन्य कठपुतली के स्वतंत्र होने की इच्छा देखकर पहली कठपुतली सोचने लगी यह मेरे मन में कैसी इच्छा जागी है। अबबय ह सबकी जिम्मेदारी के बारे म विचार करते लगी थी कि क्या वे मनचाहा जीवन जी पाएगी? क्या उनका यह कदम ठीक होगा।

विशेषः पहली कटपुतली के मन की इच्छा का वर्णन है।

शब्दार्थ

1 पाँव पर छोड़ देना- आत्मनिर्भर होने देना

2 गुस्से से उबली- बहुत कोधित हुई

3 मन के छंद छुना -मन की पुकार सुनना

4 कठपुतली- दूसरोंके इशारों पर नाचने वाली

5 और-और- अन्य सभी

6 पाँव पर छोड़ देना- स्वतंत्र रहने दो

7 जगी- जागी है

अति लघु प्रश्न

1कठपुतली को गुस्सा क्यों आया?:

कठपुतली को गुस्सा इसलिए आया क्योंकि वो धागे में बंधी हुई पराधीन है और वह स्वतंत्रता की इच्छा रखती है।

2कठपुतली को अपने पाँवों पर खड़ी होने की इच्छा है, लेकिन वह क्यों नहीं खड़ी होती?

कठपुतली को अपने पाँवों पर खड़ी होने की इच्छा है लेकिन वह खड़ी नहीं होती कयोंकि वह धागे से बंधी हुई होती है, उसकेअन्दर स्वतंत्रता के लिए लड़ने की क्षमता नहींहैऔर अपने पैरो पर खड़े होने की शक्ति भी नहीं है।

:

3पहली कठपुतली की बात दूसरी कठपुतलियों को क्यों अच्छी लगी ?

पहली कठपुतली की बात दूसरी कठपुतलियों को अच्छी लगी क्योंकि पहली कठपुतली स्वतंत्र होने की बात कर रही थी और दूसरी कठपुतलियाँ भी बंधन से मुक्त होकर आज़ाद होना चाहती थीं।

लघु प्रश्न

1कठपुतली को गुस्सा क्यों आया?

कठपुतल। को गुस्सा इसलिए आया क्योंकि वो धागे में बंधी हुई पराधी न है और वह स्वतंत्रता की इच्छा रखती है।

2कठपुतली को अपने पाँवों पर खड़ी होने की इच्छा है, लेकिन वहक्यों नहीं खड़ी होती?

कठपुतली को अपने पाँवों पर खड़ी होने की इच्छा है लेकिन वह खड़ी नहीं होती कयोंकि वह धागे से बंधी हुई होती है,

उसकेअन्दरस्वतंत्रताकेलिएलड़नेकीक्षमतानहींहैऔरअपनेपैरोपरखड़ेहोनेकीशक्तिभीन हींहै।

3 पहली कठपुतली की बात दूसरी कठपुतलियों को क्यों अच्छी लगी ?

पहली कठपुतली की बात दूसरी कठपुतलियों को अच्छी लगी क्योंकि पहली कठपुतली स्वतंत्र होने की बात कर रही थी और दूसरी कठपुतलियाँ भी बंधन से मुक्त होकर आज़ाद होना चाहती थीं।

सर्वनाम के भेद :-

1. पुरुषवाचक सर्वनाम
2. निजवाचक सर्वनाम
3. निश्चयवाचक सर्वनाम
4. अनिश्चयवाचक सर्वनाम
5. संबंधवाचक सर्वनाम
6. प्रश्नवाचक सर्वनाम

पुरुषवाचक सर्वनाम केभेद

पुरुषवाचक सर्वनाम के तीन भेद होते हैं -:

1. **उत्तमपुरुष :** जिन शब्दों का प्रयोग बोलने वाला खुद के लिए करता है। इसके अंतर्गत **मैं, मेरा, मेरे, मेरी, मुझे, मुझको, हम, हमें, हमको, हमारा, हमारे, हमारी** आदि आते हैं।जैसे– **मैं** फुटबॉल खेलता हूँ। **हम** दो, **हमारे** दो।

2. **मध्यमपुरुष :** जिनशब्दों का प्रयोग सुननेवालेकेलिएकियाजाताहै।इसकेअंतर्गत **तू, तुझे, तुझको, तेरा, तेरे, तेरी, तुम, तुम्हे, तुमको, तुम्हारा, तुम्हारे, तुम्हारी, आप** आदि आतेहैं।जैसे– **तुम** बहुतअच्छेहो।
3. **अन्यपुरुष :** जिनशब्दोंकाप्रयोगकिसीतीसरेव्यक्तिकेबारेमेंबातकरनेकेलिएहोताहै।इसकेअंतर्गत **यह**, **वह**, **ये**, **वे** आदिआतेहैं।इनमें व्यक्तिवाचक संज्ञा केउदाहरणभीशामिलहैं।

2. निजवाचक सर्वनाम

जिन शब्दों का प्रयोग वक्ता किसी चीज़ को अपने साथ दर्शाने या अपनी बताने के लिए करता है, वे निजवाचक सर्वनाम कहलाते हैं।

निजवाचक सर्वनाम के उदाहरण:

जैसे-:

- **मैं** अपने कपडे **स्वयं** धोलूँगा।
- **मैं** वहां **अपनेआप** चला जाऊंगा।

3. निश्चयवाचकसर्वनाम

जिन सर्वनाम शब्दों से किसी वस्तु, व्यक्ति या स्थान की निश्चितता का बोध हो वे शब्द निश्चयवाचक सर्वनाम कहलाते हैं।

निश्चयवाचक सर्वनाम के उदाहरण:

जैसे -: यह, वहआदि।

- **यह** कार मेरीहै।
- **वह** मोटर बाइक तुम्हारी है।
- **ये** पुस्तकें मेरीहैं।

- **वे** मिठाइयाँ हैं।
- **यह** एक गायहै।

अनुच्छेद

छात्र जीवन

छात्र जीवन किसी भी व्यक्ति के जीवन का एक महत्वपूर्ण भाग होता है।इसी समय व्यक्ति के चरित्र की नींव पड़ जाता है। बच्चों में सीखने की बहुत प्रवृत्ति होती है।युवा होने तक वह अपनी अच्छी या बुरी आदतें अपनाने लगता है।

उसे छात्र जीवन में सावधान रहकर अच्छी आदतें ही अपनानी चाहिए। इसके साथ ही छात्रों को कुए के मेढक के समान हमेशा घर में नहीं रहना चाहिए।अर्थात उसे केवल किताबी -कीड़ा बनकर नहीं रहना चाहिए। छात्र -जीवन का उद्देश्य जीवन के सभी रूपों का अपने खुले नज़रिए से देखना है छात्र उस यात्री के समान है जिसे अपनी दूरियाँखुद तय करनी हैं। रास्ता उसके बदले में दूरी तय नहीं कर सकता। पुस्तकें और शिक्षक केवल उसे उसका मार्ग बता सकते हैं ।उसे बताए हुए रास्ते में चलकर अपनी मंज़िल तक स्वयं पहुँचान होता है।

स्वाध्यायः मनोरंजन के लिए दिखाए जाने वाले किसी एक खेल के बारे में लिखिए-

गतिविधिः कठपुतली का चित्र बनाएइ और उसके बारे में पाँच वाक्य लिखिए-

पाठ-5 मिठाईवाला लेखकः भगवतीप्रसाद वाजपेयी

1 स्वर- आवा़ज

2 पुलकित- खुश होना

3 उद्यान- बगीचा

4 स्नेहाभिषिक्त- प्रेम में डूबा हुआ

5चिकों-घुघटों

6 मुरली -बाँसुरी

7 उस्ताद- होशियार ,निर्पुण

8 साफ़ा-पगड़ी

9 मादक -नशीला

10 हानि- नुकसान

11 दुअन्नी- बीस पैसा

12 स्मृति- याद

13 आजानुलंबित- घुटनों तक लंबे

14 चाव- मजे से

15 केश -बाल

16 मास- महीना

PUNA

अतिलघु

1 मिठाईवाला अलग-अलग चीज़ें क्यों बेचता था और वह महीनों बाद क्यों आता था?

बच्चे एक चीज़ से ऊब न जाएँ इसलिए मिठाईवाला अलग -
अलग चीज़ें बेचता था। बच्चों में उत्सुकता बनाए रखने के लिए वह महीनों, बाद आता था ।साथहीचीज़ेंनमिलनेसेबच्चेरोएँ, ऐसामिठाईवालानहींचाहताथा।

2मिठाईवाले में वे कौन से गुण थे जिनकी वजह से बच्चे तो बच्चे, बड़े भी उसकी ओर खिंचे चले आते थे ?

निम्नलिखित कारणों से बच्चे तथा बड़े मिठाईवाले की ओर खिंचे चले आते थे-

(i) मिठाई वाला मादक - मधुर ढंग से गाकर अपनी चीज़ों को बेचता था।

(ii) वह कम लाभ में बच्चों को खिलौने तथा मिठाइयाँ देता था।

(iii) उसके हृदय में बच्चों के लिए स्नेह था, वहकभीगुस्सानहींकरताथा।

(iv) हरबारनईचीज़ेंलाताथा।

3खिलौनेवाले के आने पर बच्चों की क्या प्रतिक्रिया होती थी ?

खिलौनेवाले के आने पर बच्चे खिलौने देखकर पुलकित हो उठते थे। बच्चों का झुंड खिलौनेवाले को चारों तरफ़ से घेर लेता था। वे पैसे लेकर खिलौने का मोलभाव करने लगते थे। खिलौने पाकर बच्चे खुशी से उछलने - कूदने लगते थे।

लघु प्रश्न

PUNA

1रोहिणी को मुरलीवाले के स्वर से खिलौनेवाले का स्मरण क्यों हो आया ?

मुरलीवाला भी खिलौनेवाले की तरह ही गा-गाकर खिलौने बेच रहा था। रोहिणी को खिलौने वाले का स्वर जाना पहचाना लगा इसलिए उसे खिलौनेवाले का स्मरण हो आया।

2किसकी बात सुनकर मिठाईवाला भावुक हो गया था ? उसने इन व्यवसायों को अपनाने का क्या कारण बताया ?

रोहिणी की बात सुनकर मिठाईवाला भावुक हो गया। इस तरह के जीवन में उसे अपने बच्चों की झलक मिल जाती है। उसे ऐसा लगता है कि उसके बच्चे इन्हीं में कहीं हँस - खेल रहे हैं। यदि वो ऐसा नहीं करता तो उनकी याद में घुल-घुलकर मर जाता, क्योंकिउसकेबच्चेअबजिंदानहींथे। इसी कारण उसने इस व्यवसाय को अपनाया।

3'अब इस बार ये पैसे न लूँगा'-कहानी के अंत में मिठाईवाले ने ऐसा क्यों कहा ?

कहानी के अंत में रोहिणी द्वारा मिठाई के पैसे मिठाईवाले ने लेने से मना कर दिया क्योंकि चुन्नू और मुन्नू को देखकर उसे अपने बच्चों का स्मरण हो आया। उसे ऐसा लगा मानो वो अपने बच्चों को ही मिठाई दे रहा है।

दीर्घ प्रश्न

1

इस कहानी में रोहिणी चिक के पीछे से बात करती है। क्या आज भी औरतें चिक के पीछे से बात करती हैं? यदि करती हैं तो क्यों? आपकी राय में क्या यह सही है?

आज भी कुछ औरतें चिक के पीछे से बात करती हैं जैसे- ग्रामीण महिलाएँ तथा कुछ मुस्लिम परिवारों की महिलाएँ भी ऐसा करती हैं क्योंकि उनमें

पर्दा प्रथा का प्रचलन आज भी है। आज के समाज में पर्दा प्रथा सही नहीं है। इसका प्रचलन धीरे-
धीरे कम होता जा रहा है।क्योंकिइससेमहिलाओंकासंकोचपताचलताहैजोउनकीप्रगतिमेंबाधकहै।

2मिठाईवाले के परिवार के साथ क्या हुआ होगा? सोचिए और इस आधर पर एक और कहानी बनाइए?

मिठाईवाला एक प्रतिष्ठत तथा सुखी सम्पन्न व्यापारी था। दुर्घटनावश किसी दिन उनकी पत्नी और उनके दोनों बच्चों की मृत्यु हो गई। पत्नी और बच्चों के न होने के कारण व्यापारी को अपना अस्तित्व और अपनी सम्पत्ति व्यर्थ लग रही थी। अतः इसी कारण मिठाईवाले ने अपने दुःख को भुलाने के लिए दूसरे बच्चों की खुशी में अपनी खुशी को ढूढ़ने की चेष्टा की। इसमें उसे काफी हद तक सफलता भी मिली।

3आपके माता-पिता के ज़माने से लेकर अब तक फेरी की आवाज़ों में कैसा बदलाव आया है? बड़ों से पूछकर लिखिए।

वक्त के साथ फेरी के स्वर भी बदल गए हैं।जैसे – पहले फेरी वाले गाकर या कविता के माध्यम से मधुर स्वर में अपने उत्पाद के गुणों को लोगों तक पहुँचाते थे परन्तु आज के फेरीवालों के स्वर में वैसी मधुरता सुनने को नहीं मिलती।साथ ही लाउडस्पीकर जैसे उपकरणों का भी प्रयोग होने लगा है।

व्याकरण

4. अनिश्चयवाच कसर्वनाम

जिन सर्वनाम शब्दों से वस्तु, व्यक्ति, स्थान आदि की निश्चितता का बोधन ही होता वे अनिश्चयवाचक सर्वनाम कहलाते हैं।

अनिश्चयवाचक सर्वनाम के उदाहरण:

जैसे-: कुछ, कोई आदि।

- मुझे **कुछ** खानाहै।
- मेरे खाने में **कुछ** गिर गया।
- मुझे बाज़ार से **कुछ** लाना है।
- **कोई** आ रहा है।
- मुझे **कोई** नज़रआ रहा है।

5. प्रश्नवाचक सर्वनाम

जिन शब्दों का प्रयोग किसी वस्तु, व्यक्ति आदि के बारे में कोई सवाल पूछने या उसके बारे में जान्ने के लिए किया जाता है उन शब्दों को प्रश्नवाचक सर्वनाम कहते हैं।

प्रश्नवाचक सर्वनाम केउदाहरण:

जैसे- **कौन**, **क्या**, **कब**, **कहाँ** आदि।

- देखोतो **कौन** आयाहै?
- आपने **क्या** खायाहै?

6. सम्बन्ध वाचक सर्वनाम

जिन सर्वनाम शब्दों का प्रयोग किसी वस्तु या व्यक्ति का सम्बन्ध बताने के लिए किया जाए वे शब्द सम्बन्धवाचक सर्वनाम कहलाते हैं।

सम्बन्धवाचक सर्वनाम के उदाहरण:

जैसे :- **जो-सो**, **जैसा-वैसा** आदि।

- **जैसी** करनी **वैसी** भरनी।
- **जो** सोवेगा **सो** खोवेग जो जागेगा सो पावेगा।

जैसा बोओगे **वैसा** काटोगे

निबंध

समय का सदुप्रयोग

समय निरंतर गातिशील है। समय का चक्र लगातार घूमता रहता है। समय किसी की प्रतीक्षा नहीं करता। विधाता प्रत्येक प्राणी के जीवन क्षण निशिचत करके उसे इस धरती पर भेजता है। इस निश्चित समय में उसे अपने सभी कार्य पूरे करने होते हैं। जीवन का प्रत्येक क्षण अमूल्य है। यदि एक क्षण का भी दुरूप्रयोग किया जाता है तो मानव को उछताना पड़ता है। अतः समय का सदुप्रयोग करना आवश्यक है।

समय और मानव जीवन प्रकृति की अमूल्य निधि हैं। दोनों का ताल- मेल होना आवश्यक है।यदि समय के अनुसार चलना नहीं सीखा तो जीवन की दौंड में पीछे रह जाएँगे।हमें समय को व्यर्थ नहीं करना चाहिए। जो समय को नष्ट करता है समय उसको नष्ट कर देता है।जो समय के साथ चलता है उसे सफलता, यश, सम्मान मिलता है खुशियों से उसकी झोली भरी रहती है।इसलिए संत कबीर ने कहा है-

काल करै सो आज कर, आज करै सौ अब्ब।

पल में परलय होएगी, बहुरि करेगा कब।।

हर काम के लिए एक समय और हर समय के लिए एक काम निर्धारित होता है। अब यह मानव की बुदिध और सोच पर निर्भर करता है कि उसने इस बात को समझा है कि नहीं रोगी को दवा समय पर न मिले तो उसका इलाज नहीं हो पाता । इक मिनट के विलंब से पहुँचन पर स्टेशन से गाडी- छूट जाती है। नेपोलियन के उच्च अधिकारी के पाँच मिनट देर से सेना लेकर आने से

नेपोलियन की हार हुई। वह बंदी बना लिया गया।जो व्यक्ति समय- तालिका बनाकर अपना कार्य करते हैं, वे ने तो कभी खाली बैठते हैं और न कभी यह कहते हैंकि समय की कमी के कारण हम अमुक कार्य नहीं कर पाए।

समय पर कार्य करने वाला व्यक्ति केवल अपना भला नहीं करता बलिक अपने परिवार ,समाज तथा राष्ट्र की उन्नति में भी सहायक होता है। समय के सदुप्रयोग से मनुष्य धनवान, बुद्धिमान तथा शक्तिमान बन सकता है।समय केवल उनका साथ देता है, जो उसके मूल्य को पहचानकर उसका उचित उपयोग करते हैं अवसर चूक जाने पर समय कभी माफ़ नही करता।सही कहा गया है-

क्या वर्षा जब कृषि सुखाने।

विदयाथी -जीवन मेंसमय का और भी महत्व होता हैं।विदयार्थी के लिए एक-एक क्षण का महत्व होता है। विदयार्थी जीवन में प्राप्त की हुई विदया एवं योग्यता पर ही भावी जीवन रूपी भवन खड़ा होता हैं।अतः इसका सदुप्रयोग करना प्रत्येक विदयार्थी का कर्तव्य है।

स्वाध्यायः किसी एक व्यवसायकारो पर एक अनुच्छेद लिखिए-

गतिविधिः व्यवसायकारों का चित्र चिपकाइए-